हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या:- 06

दिनांक
27.08.2020

बैनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)

मीरा के पदों की व्याख्या

पद:- 07 हेरी, मैं तो प्रेम दीवानी, मेरो दरद न जाने कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस विध सोना होय ?
गगन मंडप पै सेज पिया की, किस विध मिलना होय
घायल की गति घायल जाने की जिन लाई होय
जौहरी की गति जौहरी जाने कोमा की जौहर होय
दरद की मारी बन बन डोलू बैद मिला नहीं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटेगी जब वैद सांवलिया होय।।

व्याख्या:- प्रस्तुत पद में मीरा ने अपने हृदय के दर्द को अत्यंत मार्मिक शैली में किया है। मीरा की अंतर्मन की पीड़ा कोई समझ नहीं पाता और उसे निरंतर कष्ट पहुँचाता रहता है। उस कष्ट की पीड़ा से आहत मीरा यह कह उठती है कि हे, सखी मैं तो कृष्ण के प्रेम की दीवानी हूँ। मुझे इनके प्रेम के सिवा कुछ और नहीं सूझता। कृष्ण के प्रति मेरे इस अनन्य प्रेम को कोई समझ नहीं पाता। वह कहती है कि मेरी शैय्या कांटों के ऊपर बनी है। तात्पर्य यह कि मीरा को श्री कृष्ण प्रेम से उत्पन्न पीड़ा एवं संसार द्वारा गए कष्ट के कारण नींद नहीं आती है। वह पुनः कहती है कि उसके आराध्य श्री कृष्ण की

शैय्या तो गगन मंडप पर सजी हुई है और उनसे मिलना असंभव है। आगे मीरा कहती है कि पीड़ित या घायल मनुष्य का दर्द कोई घायल मनुष्य ही जान सकता है। जौहरी का उदाहरण देते हुए मीरा कहती है कि एक जौहरी ही दूसरा जौहरी को समझ सकता है। इस प्रकार उनके दर्द को भी व्यक्ति समझ सकता है जो इस दर्द से पीड़ित हो। अतः वह पुनः कहती है कि मैं दर्द की मारी इधर-उधर भटकती रहती हूँ किन्तु अब तक मुझे कोई भी वैद्य नहीं मिल पाया है। वह कहती है मेरे अन्दर की यह पीड़ा तभी मिट सकती है जब श्री कृष्ण स्वयं वैद्य बनकर आएंगे और मुझे दर्शन देंगे।

पद :-10 माई म्हाणे सुपणा माँ परण्यां दीनानाथ।
छप्पण कोटां जणां पधारयां दूल्हे सिरी ब्रजनाथ॥
सुपणा माँ तोरण बंध्यारी सुपणामां गह्या हाथ।
सुपणा माँ म्हारे परण गया पायां अचल सुहाग॥
मीरां रो गिरधर मिल्यारी, पुरब जणम रो भाग॥

व्याख्या :- प्रस्तुत पद में मीरा कहती है कि उनके सपने में श्रीकृष्ण दूल्हे राजा बनकर

पधारे। सपने में तोरण (द्वार) बंद था जिसे हाथों से तोड़ा दीनानाथ ने। मीरा ने सपने में श्रीकृष्ण के पैर छुवे और सुहागन बनी। मीरा पुनः कहती है कि मैं तो श्री कृष्ण की ब्याही दुल्हन हूँ लेकिन पुरब जनम की बात है। पुरब जनम में तो मुझे रोना ही है। अभी तो कृष्ण से मिलना है।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० – 8292271041
ईमेल – benamkumar13@gmail.com

दिनांक
30/08/2020